छत्तीसगढ़ में पर्यटन

कोरिया

1.	भरतपुर	कोटाडोल (ऐतिहासिक, पुरातात्वि)	भरतपुर तहसील में 'गोपद' और 'बनास' नदियों के निकट ऐतिहासिक स्थल – 'कोटाडोल' स्थित है। यहां अशोककालीन कई मूर्तियां प्राप्त हुई हैं, जिसमें इस काल की अशोक का साम्राज्य विस्तार इस क्षेत्र तक रहा होगा।
2.	जनकपुर	घाघरा (ऐतिहासिक, पुरातात्विक)	यहां एक प्राचीन गुफा है, जिसे 'सीतामढ़ी' के नाम से जाना जाता है। गुफा के अंदर मध्य में पत्थर के कटे हुये दो सुंदर खम्भे हैं, उन्हीं खम्भो के मध्य में शंकर जी की मूर्ति है, मानयता है कि सीताजी ने यहां शिव पूजा की थी।
3.	मवाही	हरचौका : मानवीकृत गुफाएं (ऐतिहासिक, पुरातात्विक)	ग्राम मवाही में नदी के किनारे 'हरचौका' स्थित है। यहां का आकर्षण पहाड़ी चट्टान को काटकर बनायी गयी गुफाएं हैं जिनके अंदर कई छोटी–छोटी कोठरियां भी है, जिनमें शिवलिंग एवं शंकरजी की मूति के साथ अन्य देवी–देवताओं की प्राचीन मूर्तियां स्थापित हैं।
4.	मुरेरगढ़	मुरेरगढ़ (ऐतिहासिक, पुरातात्विक)	'मुरेरगढ़' एक ऊँवे पहाड़ पर स्थित है। इसकी चोटी की उंचाई लगभग 3027 फीट है। यहां दूसरी शताब्दी के प्राचीन किले के भग्नावशेष हैं, जोकि राजा बुलंदशाह द्वारा बनवाया गया था।

सूरजपुर

1.	कुदरगढ़	मां बघेश्वरी मंदिर	✓ भैयाथान तहसील के अंतर्गत कुदरगढ़ की पहाड़ी में यह मंदिर स्थित है।
2.	सारासोर	गंगाधर मंदिर	
3.	देवपुरा (भैयाथान)	महामाया मंदिर	✓ नवरात्रि के अवसर पर मेले का अयोजन किया जाता है।
4.	शिवपुरी (प्रतापपुर)	शिवपुरी मंदिर	✓ प्रतापपुर तहसील के शिवपुरी में स्थित है। यह महाशिवरात्री व बसंत पंचमी में समारोह का आयोजन किया जाता है।
		तमोर पिंगला अभ्यारण	✓ छत्तीसगढ़ का सबसे बड़ा अभ्यारण है।
6.	जुमड़ी	डुगडुगी पत्थर	✓ भैयाथान तहसील के जुमड़ी ग्राम में स्थित है। इस पत्थर से डुगडुगी की अवाज आती है उसे हिलाने पर इसलिए इसका नाम डुगडुगी पत्थर रखा गया
7.	ओडगी	सीतालेखनी पहाड़ बांक लकंड लक्ष्मन पंजा	

सरगुजा

1.	रामगढ़ की पहाड़ी		✓ इस पहाड़ी पर अनेक मंदिर गुफाएं खण्डहर स्थित है। ✓ ऐसा कहा जाता है कि श्री राम वनवास के दौरान अपने भाई लक्ष्मण व पत्नी सीता के साथ यहां रूके हुये थे। रामगढ़ की पहाड़ी पर सीताबेंगरा, लक्ष्मण बेंगरा, जोगीमारा, हाथीपोह स्थित है।
		सीताबेंगरा	✓ शिलालेखों के अनुसार यह विश्व का प्राचीनतम नाट्शाला है। ✓ 200 ई. पूर्व में भरतमुनि ने पअनी नाट्शाला की रचना की थी।
		जोगीमारा	✓ इस गुफा में अनेक भिन्तिचिंत्र पाया गया है। ✓ इस गुफा में नृत्तक देवदन्त एवं नृत्यिक सुतनुका के प्रेमगाथा का वर्णन किया गया है। जो ब्राम्ही लिपि एवं पाली भाषा में उत्कीर्ण है। ✓ महाकवि कालिदास ने इसी गुफा में मेघदूत की रचना की थी। प्राकृतिक सौंदर्य को देखकर इसे स्वर्ग का द्वार कहा जाता है। ✓ सीताबेंगरा नृत्यशाला में नृत्य करने वाली नृत्यांगनाओं के विश्राम के लिए बनवाया गया ।
		लक्ष्मणबेंगरा	✓ ऐसा माना जाता है कि इसमें लक्ष्मण जी विश्राम किया करते थे।
		हाथीपोह	✓ 49 मी. लंबा तथा 17 मी. ऊंचा एक विशाल सुरंग है। ✓ इसकी ऊंचाई इतनी है कि हाथी आसानी से गुजर सकता है। ✓ इसके अंदर एक कुंड है जिसे सीता कुंड कहते है।
		पउरीदरवाजा	✓ इसे कई पत्थरों के टुकड़ों से जोड़कर बनवाया गया है। ✓ इस द्वार के आगे कबीर चौरा नामक चबूतरा है जो धर्मदास नामक योगी का कब्र है।
		तुर्रापानी	✓ चट्टानों के बीच से पानी की धारा बहती है। ✓ यहां की मिटटी का रंग लाल है ऐसा कहा जाता है कि रामचन्द्र जी ने सीता जी के मस्तक पर इसी स्थल पर इसी माटी से तिलक लगाया था।
		रावणदरवाजा	✓ इसे सिंह दरवाजा भी कहते है, इसी के अंदर रावण दरवाजा रावण की मूर्ति, कुंभकर्ण की मूर्ति कुछ नाचती हुई लड़कियों की प्रतिमा तथा सीता जी व हनुमान जी की प्रतिमा से युक्त है।
2.		ठिनठिनी पत्थर (भार–200 किलो)	✓ माना जाता है कि ठिनठिनी पत्थर मंगल ग्रह से गिरा उल्का पिण्ड है जो भारी तत्व एंव हल्के गैसों से बना हुआ है। ✓ इस पत्थर को बजाने से घण्टियों की अवाज आती है।
3.	कलचाभदवाही	सतमहला मंदिर	✓ 8वी–9वीं शताब्दी में निर्मित इस प्राचीन मंदिरों को हैहयवंशी शासक कार्तिवीर्य सहस्त्रार्जुन ने बनाया था। ✓ यह सात भग्न प्राचीन मंदिरों का समूह प्राप्त हुआ है यह पंचायतन शैली में निर्मित शिवमंदिर के अवशेष प्राप्त है।
4.	देवटिकरा	छेरिका देउरमंदिर	✓ इस मंदिर में मण्डप, अन्तराल व गर्भग्रह है। मण्डप के स्तभ अंलकृत है तथा इसके छत एवं गर्भग्रह में शिखर भाग नहीं है।
5.	महारानीपुर (सीतापुर)	देउर मंदिर	✓ देउरमंदिर सीतापुर तहसील के महरानीपुरगांव में स्थित है।
6.	देवगढ़ (उदयपुर)	देवगढ़	✓ देवगढ़ नामक गांव में रिहन्द नदी के तट पर 11 मंदिरों के भग्नावशेष प्राप्त हुए है। ✓ एकादशरूद्र की प्रतिमा – इसे अर्द्धनिशिखर भी कहा जाता है। ✓ गोल्फीमठ – ऋषि यमदग्नि इस क्षेत्र में साधना करते थे।5.

7.	महेशपुर	शिवमंदिर	✓ 10वीं शताब्दी में इस मंदिर का निर्माण किया गया। यह मंदिर बलुआ एवं लाल पत्थरों से निर्मित है।
		कुडिया–झोरी–मोड़ी	✓ यह 2 विष्णु मंदिर है।
		ऋषभनाथ तीर्थकर	✓ 8वीं शताब्दी में निर्मित जैन तीर्थकर ऋषभनाथ की एक प्रतिमा अवस्थित है।
8.	अंबिकापुर	तकिया मजार	✓ तकिया मजार में बाबा मुराद शाह का मजार है।
9.		उल्टा पानी	
10.	मैनपाट	मैनपाट	✓ 1962–63 में भारत–चीन युद्ध के पश्चात् तिब्बती शरणार्थी भारत सरकार के द्वारा मैनपाट पर बसाये गये। ✓ प्राचीन बौद्ध धर्म की संस्कृति को मैनपाट निवासी मानते है।
		बौद्ध विहार	✓ यह मंदिर मंदिर मैनपाट में स्थित है। इस मंदिर में बौद्ध परंपरा के अनुसार पूजा–अर्जना की जाती ह। ✓ इस मंदिर का निर्माण परम्परागत बौद्ध वास्तुकला के अनुसार किया गया है।
		टाईगर प्वाईट	✓ महादेव मुड़ा नदी 60 मी. की ऊचाई से गिरकर जलप्रपात बनाती है। ✓ पहले यहां टाईगर घूमा करता था इसी कारण इसका नाम टाईगर प्वाईट पड़ा।
		मछली प्वाईट	✓ सघन वनों के मध्य मछली नदी प्रवाहित होती है इसमें अच्छी मछलिया पायी जाती है और यह जलप्रपात का निर्माण करती है उसे ही मछली प्वाईट कहते है।
		परपटिया	✓ मैनपाट के पश्चिम भांग से बंदरकोट की दुर्गम उंची पहाड़ी, प्राकृतिक गुफा रकामाड़ा, जनजातियों के आस्था का प्रतीक दुल्हा–दुल्हन पर्वत, बनरई बांध, श्याम घुनघुट्टा के बांघ के साथ ही रामगढ़ की पहाड़ी दिखाई देती है।
		मेहता प्वाईट	✓ यह सरगुजा और रायगढ़ की सीमा बनाती है। जाहां झरने व जलप्रपात है।
		देव प्रवाह झरना	✓ संरक्षित वन में एक झील है जो 80 मी. ऊंचाई से गिरकर झरना का निर्माण करती है।
		गुफाएं	✓ बंदरकोट (32 किमी.), रकामाड़ा (32 किमी), भालू माड़ा (8 किमी.) झील गुफा (9 किमी.), पैगागुफा (15 किमी.) है।
		एडवेंजरजोन	✓ परपटिया (28 किमी.) मालतीपुरी (22 किमी.)
		सांस्कृतिक वैभव	✓ ट्राईवल विपेज अवगवां, तिब्बती कैंप
		पर्यटन परिपथ	✓ परपटिया नाम दमाली ट्रेकिंग (28 किमी.) इको बाटिनिकल ट्रेल (माटी घाट 22 किमी.) मेडिको बाटिनिकल ट्रेल (मछली नदी में 19 किमी.) मेडिसिनल ट्रेल मालतीपुर (12 किमी)
		जनआस्था	✓ बौद्ध मठ, काली मंदिर, बंजारी मंदिर, जंगलेश्वर मंदिर, शिवालय, पनही पखना दुल्हा–दुल्हन
		घाटियां	✓ कदनई, करदना, सकरिया, गोंविदपुर, पैगा

बलरामपुर

1.	डीपाडीह		✓ डीपाडीह बलरामपुर लिं में कन्हार व गलफूला नदी के संगम पर उत्खनन के दौरान अनेक प्राचीन मंदिर प्राप्त हुए है। ✓ डीपाडीह का अर्थ देव स्थान होता है। जहां निरन्तर दीपक जलता है। ✓ यहां के स्तभों, देवालयों के चित्र कतारबद्ध रूप से खुदे हुए है। ✓ विवर से निकलते हुए सर्प, युद्धरत मयूर तथा बाज राजहंस, नायिकाओं के चित्रण, त्रिशुल तथा फूट–मालाओं तथा पत्तों के चिन्ह भी बने हुए है। ✓ यहां की कला प्राचनी ब्रम्हकला का प्रतीक है। ✓ कल्याण सुन्दर, शिवगौरी, कुबेर, पृथ्वी, उमा महेश्वर तथा ब्रम्हा की विशाल प्रतिमाएं प्राप्त हुई है। ✓ यह एक शिव लिंग में 108 शिवलिंग बने हुए है।
		रानीपोखरा मंदिर	✓ यहां पर रानी पोखरा का एतेहासिक सरोवर विद्यमान है।
		शिव मंदिर	✓ 8वी–9वीं शताब्दी में इस मंदिर का निर्माण किया गया।
		बोरजाटीला मंदिर	✓ प्राचीन शिव मंदिर एवं बौद्ध भिक्षुकों के आवासीय मठ प्राप्त हुए है।
		ब्रम्हा मंदिर	✓ ब्रम्हा की प्रतिमा स्थित है, जिसमें दाढ़ी एवं मूछ नहीं है।
		सामतसरना मंदिर	✓ यह शिवमंदिर है, इसके मण्डप में विष्णु महिषासुर मर्दिनी, गणेश, कार्तिकेय बराह की प्रतिमाएं स्थित है।
		उरांवटोला मंदिर	✓ इस मंदिर के शिलालेख में नगरी लिपि में ऊँ नमो विश्वकर्मा उत्कीर्ण है।
		अर्जनगढ़	✓ अर्जुनगढ़ पहाड़ी पर घीरियालता गुफा स्थित है।
		तातापानी	✓ गर्म जल के 8–10 भू–स्त्रोत स्थित है। इसे तातापानी के नाम से जाना जाता है। गर्म जल का स्त्रोत होने के कारण इस क्षेत्र में जियो थर्मल कार्पोरेशन के द्वारा 30 मेंगावाट क्षमता वाले भूतापीय संयंत्र की स्थापना की जाएगी। ✓ इस जल का तापमान 80 डिग्री से. से 100 डिग्री. से. तक होता है इसमें सल्फर की मात्रा पायी जाती है। जिससे चर्मरोग ठीक हो जाता है। ✓ इसके अलावा यहाँ विशाल शिव जी की प्रतिमा है जिसे जिला प्रशासन द्वारा बनाया गया है। ✓ यहाँ हर वर्ष मकर संक्रांति के अवसर पर तीन दिवसीय मेले का आयोजन किया जाता है।

जशपुर

1.	**सामरबार**	**कैलाश गुफा**	✓ बगीचा तहसील के पास रामेश्वर गुरू गहिश बाबा का आश्रम है जिसे कैलाश गुफा क नाम से जाना जाता है। महाशिवरात्रि के अवसर पर प्रतिवर्ष मेले का आयोजन किया जाता है। ✓ यहाँ संस्कृत पाठशाला भी है। ✓ यहाँ पार्वती यज्ञ मंडप, बंधमड़ा है।
2.	**तपकरा**	**तपकरा**	✓ फरसाबहार तहसील के समीप तपकरा ग्राम स्थित है। ✓ इसे छत्तीसगढ़ का नागलोक कहा जाता है। यहां 40 प्रजाती के सर्प पाए जाते है जिसमें 6 प्रजातियों में से 4 प्रजातियों यहां पायी जाती है।
3.	**कुनकुरी**	**कैथोलिक चर्च**	✓ एशिया का दूसरा सबसे बड़ा कैथोलिक चर्च है। ✓ इस चर्च में लोहे के सात पवित्र स्तंभ बने हुए है। ✓ 27 अक्टूबर 1679 में इसे श्रद्धालुओं के लिए खोला गया है।
4.		**सोग्रा अधोर आश्रम**	✓ भगवान अघोरेश्वर का आश्रम है।
5.	**दमेरा**		✓ रामनवमी एवं कर्तिक पूर्णिमा के अवसर पर प्रतिवर्ष मेले का अयोजन किया जाता है।
6.	**आस्था ग्राम**	**हर्रा डिपा**	✓ यहां साल के वृक्ष ''द्वादस टुलिंग'' स्थान का पौराणिक महत्व है।
7.		**कोटोबिरा ईब घाटी**	✓ यह एक अधूरा बांध है, मान्यता के अनुसार भगवान से इसे एक रात में बनाया सूर्योदय होने के कारण यह पूरा नहीं हो पाया। यह सुन्दर शिव मंदिर बनाया गया है।
8.	**बगीचा**	**बगीचा**	✓ प्राकृतिक सौदर्य से भरा हुआ नाशपत्ती, लीची और आय का विशाल बगीचा होने के कारण इसा नाम बगीचा पड़ा।
9.		**रानीझूला**	✓ यह ईब नदी का उद्गम स्थल है। जहां एक कुण्ड का निर्माण कराया गया। ✓ यही पर स्वर्गकण मिलते है।
10.		**हथगड़ा**	✓ ऐतिहासिक पुरावशेषों के लिए प्रसिद्ध है।
11.	**चुंदापाट**	**रंगबिरंगी मिट्टी**	✓ जेऊर नदी के किनारे पंडरापाट के पास एक चुन्दापाट है जहां रंग बिरंगी मिट्टियां मिलती है।
12.		**लेखा पत्थर**	✓ जोड़ा नामक नाले के किनारे किलाखंड पर कुछ अस्पष्ट लिपि है। जिसे स्थानीय लोग लिखा पखना कहते है।
13.		**बेलमहादेव**	✓ यह एक प्राकृतिक गुफा है। इसे जोगी गुफा भी कहते है।
14.	**सन्ना**		✓ प्राकृतिक सौदर्य से परिपूर्ण गुफा, झरना, अरण्य जैसे पर्यटन के लिए प्रसिद्ध है। ✓ यही खुडियारानी गुफा है इस गुफा में लंबी सुरंग है जिसके अंतिम छोर में दीप प्रज्वलित है।
		खुड़ियारानी गुफा	✓ यह पहाड़ी के किनारे खुड़ियारानी मंदिर है इस गुफा के भीतर गहरा अंधकार है जहां जाना संभव नहीं है। ✓ खुड़िया दवी कोरवा जाती की आराध्य देवी है। ✓ इसे देखने पर सुन्दर हिल–स्टेशन के समान दिखाई देता है। ✓ इसे फूलों की घाटी भी कहा जाता है। ✓ पानी जब उपर से गिरता है तो फूलों की पट्टी दिखाई देती है।

बिलासपुर

1.	रतनपुर	महामाया मंदिर	✓ इस मंदिर की स्थापना रत्नदेव–I ने 1050ई. में की। ✓ इस मंदिर इस मंदिर का मंडप 16 स्तंभों पर टिका हुआ है। ✓ यह मंदिर नागर शैली में बना हुआ है। ✓ मंदिर के गर्भगृह में महामाया की साढ़े तीन फीट ऊंची दुर्लभ प्रतिमा स्थापित है। ✓ इसका दूसरा नाम रत्नावली भी था। ✓ रत्नों का भंडार होने के कारण इसका नाम रतनपुर पड़ा। ✓ यहां पर भी 1400 तालाब थे जो घटकर 250 के आसपास रह गए हैं। ✓ रतनपुर का प्राचीन नाम मणिपुर था इसके 5 खंड थे। 1. तुमान खोल 2. नलखोल 3. देवीखोल 4. भैरवखोल 5. वराह खोल ✓ रतनपुर के किले में प्रथम सिंह दरवाजा, भैरव दरवाजा, गणेश दरवाजा व सेमरदरवाजा बने थे। ✓ मध्य युग में यहां नालंदा एवं तक्षशिला की तरह विश्वविख्यात विद्यालय थे। ✓ कुछ विद्वानों के अनुसार यह भारत का सबसे बड़ा विश्वविद्यालय था जहां सांख्य दर्शन एवं बौद्ध दर्शन के छात्र अध्ययन करते थे।
		सूर्य मंदिर	✓ इस मंदिर को लखेश्वर महादेव मंदिर कहते है। ✓ इस मंदिर में शिवलिंग जलहरी के साथ–साथ सूर्य को प्रस्तर मूर्ति भी है। ✓ यहां एक एतेहासिक तलाब भी है जिसे इस तरह स्थापित किया गया है की जब सूर्य दक्षिणायन होते हैं तो शिवलिंग दक्षिण की ओर झुका होता है और सूर्य जब उत्तरायण होता है तो उत्तर की ओर झुका होता है। ✓ चौखट के दोनों और गंगा यमुना की मूर्तियां एवं उनके उपरी भाग में गंधर्वों के नृत्य गायन का मनमोहन दृश्य है। ✓ द्वार पर ब्रम्हा, विष्णु की मूर्तियां तथा शिवजी का तांडव नृत्य का दृश्य है। ✓ किले के पास जगन्नाथ मंदिर है। ✓ 20 रानियों का प्रसिद्ध सती मंदिर बीस दुआरिया भी ऐतिहासिक स्थान है। ✓ नगर के प्रवेश मार्ग मके पूर्व में बाबा भैरवनाथ का मंदिर है। जिसकी 9 ऊंची विशल मूर्ति है।
2.	मल्हार		✓ मल्हार मस्तूरी के निकट एक गांव है। ✓ यह प्रसिद्ध व्यापारिक प्रतिष्ठान माना जाता था ✓ उत्खनन के दौरान महापाषाण युगीन सभ्यता से सम्बन्धित प्रमाण भी उपलब्ध है। ✓ कुछ लोग इसको शरभपुर कहा करते थे। ✓ यहां बड़ी मात्रा मे मूर्तियां, शिलालेख, ताम्रपत्र तथा सिक्के प्राप्त हुए है। ✓ काला एवं लाल रंग के दुलभ मृणपात्र मिले है। ✓ यहां कई मंदिरों के अवशेष मिले है जिसमें पातालेश्वर केदार मंदिर महत्वपूर्ण है।
		डिडनेश्वरी देवी	✓ यह काले ग्रेनाइट पत्थर की है। ✓ प्रतिमा नखशिख तक आभूषणें से सुसज्जित और प्रसन्न मुद्रा लिये हुए पद्मासन पर विराजमान है। ✓ संग्राहालय में भगवान विष्णु, नरसिंह, हनुमान, प्रजापति ब्रम्हा, सरस्वती, शिव–पार्वती महावीर आदि की मूर्तियां भी है।
		तालागांव	✓ देवरानी–जेठानी मंदिर के नाम से यह गांव प्रसिद्ध है। ✓ जेठानी मंदिर का निर्माण छठवी शताब्दी के उत्तरार्ध में और देवरानी मंदिर का निर्माण छठवी शताब्दी के पूर्वाद्ध मे हुआ था। ✓ यहां खुदाई में कार्तिकेय की मूर्ति और भगवान विष्णु का एक फीट लम्बा चार इंच चौड़ा फलक मिला है।

3.	खूटाघाट		✓ यह पर्वतों और जंगलों के मध्य में स्थित बांध है।
4.	तखतपुर	बेलपान	✓ यहां प्रसिद्ध कुंड है। जिसे बड़ा तालाब भी कहते है। ✓ इसी कुंड से छोटी नर्मदा नदी निकलती है। ✓ यह क्षेत्र समाधि के लिए प्रसिद्ध है। ✓ यहां कल्चूरी कालीन शिव मंदिर है, यहां शिवजी लक्ष्मीनारायण, गंगा, यमुना आदि की मूर्तियां है।
		श्री काल भैरव मंदिर	
		श्री महालक्ष्मी देवी मंदिर	
		जूना शहर तथा बादल महल	
		हाथी किला	
		बुद्धेश्वर महादेव मंदिर	
		गिरिजावन	
		हनुमान मंदिर	
		भुवनेश्वर महादेव	
		खूटाघाट बांध	

जांजगीर-चांपा

1.	अकलतरा	दलहा पहड़	✓ सिद्धदमुनी का आश्रम तथा सूर्यकुण्ड स्थित है नागपंचमी में मेला का अयोजन किया जाता है।
		कोटमीसोजार	✓ कोटमीसोनार में स्थित क्रोकोडाईल पार्क जो मगरमच्छ के संरक्षण के लिए बनाया गया है। ✓ यहां साईस पार्क एनर्जी पार्क, आडीटोरियम आदि बनाया गया है।
2.	जांजगीर	नकटा मंदिर	✓ भगवान विष्णु की चतुर्भुजी प्रतिमा स्थित है जिसमें उनके चार भुजाओं में फूल शंख चक्र एवं अभय है। ✓ नकटा मंदिर को अधूरा मंदिर भी कहा जाता है। ✓ इसका निर्माण कल्चुरी शासक जाजल्यदेव के द्वारा 12 वीं शताब्दी में किया था। ✓ जाजगीर में प्रतिवर्ष जाजत्यदेव महोत्सव का आयोजन किया जाता है। ✓ इसकी दीवालों पर दशावतार की मूर्तियां है। ✓ इसके समीप भीमा तालाब है। ✓ मूर्तियों के किनारे किन्नरियों तथा स्त्रियों की मूर्ति है।
3.	खरौद	लक्ष्मणेश्वर मंदिर	✓ यह शिव मंदिर है, इसे लखनेश्वर महादेव के नाम से भी जाना जाता है। ✓ यहां लोगों की मान्यता है की चावल के एक लाख दोने चढ़ाने पर इच्छा की पूर्ति होती है। ✓ इस शिवलिंग में एक लाख छिद्र है इसलिए इसका नाम लक्षलिंग भी है। ✓ खरौद आम्र वृक्षों के लिए प्रसिद्ध है।

4.		चद्रचूड़ मंदिर	✓ यह एक शिव मंदिर है जिसे चंद्रचूड़ महादेव का मंदिर भी कहा जाता है। ✓ इस मंदिर में कलचुरी कालीन शिलालेख भी प्राप्त हुए है।
5.		केंवटमंदिर	
6.		शिवरीनारायण	✓ एतेहासिक तथ्यों के अनुसार भगवान राम का वनवास काल के दौरान माता शबरी से मुलाकात में हुई जहां भगवान राम ने शबरी के जूठे बेर, प्रेम सहित ग्रहण किये। जिस कारण इस क्षेत्र का नाम शबरी नारायण पड़ा। ✓ यहां माता शबरी का ईटों से निर्मित प्राचीन मंदिर है। ✓ शिवरीनारायण का मंदिर एक प्रसिद्ध मंदिर है जहां भगवान विष्णु की चतुर्भूजी प्रतिमा विराजमान है। ✓ इस मंदिर को बड़ा मंदिर या नरनारायण मंदिर भी कहा जाता है।
6.	चन्द्रपुर, डभरा	चन्द्रहासिनी मंदिर	✓ महानदी के तट पर चन्द्रहासिनी देवी माता का मंदिर हैं ✓ नवरात्रि के समय मेले का अयोजन किया जाता है। ✓ डभरा तहसील में मांड नदी लात नदी और महानदी के संगम पर स्थित चन्द्रपुर है जहां मां चन्द्रहासिनी देवी का मंरिर है। ✓ संगम के टापू पर नाथलदाई का मंदिर है।
7.	पीथमपुर	कालेश्वर नाथ मंदिर	✓ यह एक शिव मंदिर है। ✓ महाशिवरात्रि एवं रंगपंचमी के समय 10 दिप के मेले का आयोजन किया जाता है। ✓ प्रतिवर्ष रंग पंचमी के अवसर पर नांगासंतों द्वारा भगवान शिव के विवाह का जुलूस निकाला जाता है।
8.		अड़भार	✓ यह एक प्राचीन मंदिर है। इस मंदिर में आठ हाथ वाली देवी विराजमान है। ✓ नवरात्रि के अवसर पर यहां ज्योति कलश जलाया जाता है। ✓ इस मंदिर के दो दरवाजे है।
9.	बरपाली	गुंजी दमउ दरहा	✓ बरपाली गांव के समीप स्थित इसे दमउदरहा एवं ऋषभतीर्थ भी कहा जाता है। ✓ यह ऊंची–ऊंची पहाड़ियों के बीच कई गुफाएं स्थित है जिसमे प्राचीन समय में ऋषभदेव निवास करते थे। ✓ ऋषीदेव ने यहां तपस्या की, यहां इनकी प्राचीन मूर्ति स्थापित की गई।
10.	सक्ती	दामूधारा	✓ यहां की प्राकृतिक गुफा, रामाजानकी मंदिर, राधा कृष्ण मंदिर, ऋषभदेव मंदिर, पंचवटी और सीतामंडी प्रमुख दर्शनीय स्थल है।
11.		घटादाई (त्रिपुरश्रृंगार देवी)	✓ जंगलों से घिरा हुआ स्थल है। ✓ लीलागर नदी के तट पर चारों ओर पर्वत से घिरा हुआ प्राकृतिक सौन्दर्य से भरा हुआ दृश्य है।
12.	पामगढ़	देवारघाट	✓ यह एक सुन्दर पिकनिक स्थल है। ✓ यहां महानदी, शिवनाथ, लीलागर नदियों के संगम में है।

कोरबा

1.	चैतुरगढ़	महिसासुर मर्दिनी मंदिर	✓ यह कोरबा जिले से उत्तर में स्थित है। ✓ इस किले का निर्माण 1894 में राजा पृथ्वी देव प्रथम द्वारा करवाया गया है। ✓ पुरातत्व वेत्ता मानेते है की यह एक अभेघ प्राकृतिक किला है। ✓ इसमें तीन प्रमुख दरवाजे है, जिन्हें क्रमशः मेनका, हमकारा और सिंह द्वार कहा जात है। ✓ पहाड़ी के उतर 4 तालाब है। ✓ यहां प्रसिद्ध महिषासुर मर्दिनी मंदिर स्थित है। देवी के 12 हाथ है।
		शंकरगुफा	✓ चैतुरगढ़ मंदिर से शंकरगुफा 3 किमी. की दूरी पर स्थित है। ✓ यह एक सुरंग की तरह 25 फीट लंबा है यही पर भगवान ने भस्मासूर को भस्म किया था।
2.	पाली	शिवमंदिर	✓ गांव के नैत्तृत्य कोण पर एक सुन्दर सरोवर है इसके किनारे अतिप्राचीन शिव मंदिर है। ✓ मंदिर के बाहरी भाग में तथा भीतर सभा मंडप और गर्भग्रह के द्वार पर खुदाई का सुन्दर और आर्कषक कार्य हुआ है। ✓ इस मंदिर के बाहरी भाग में भगवान शिव की प्रतिमा, आस्ट दिग्पाल इन्द्राणी सूर्य, वरूण, चामुण्ड और पार्वती की प्रतिमाएं अंकित हैं ✓ इस मंदिर की दीवारों पर श्री मज्जाजल्ल देवस्य कीर्ति अंकित है इसका जीर्णोद्वार 12वीं शताब्दी में कल्चुरी वंश के सबसे प्रतापी शासक जाजल्यदेव-I ने कराया था।
3.	तुम्माण		✓ बिलासपुर, अंबिकापुर मार्ग पर कटघोरा से 10 किमी. की दूरी पर पसान मार्ग पर मुम्माण स्थित है। ✓ यहां कलचुरी शासक रत्नदेव-I ने शिव मंदिर का निर्माण कराया था। ✓ शिव मंदिर के अलावा यहां उत्खनन में प्रापत महल एवं विभिन्न देवी–देवताओं, नायक–नायिकाओं की एंव मिथुन प्रतिमाएं दर्शनीय है।
4.	लाफागढ़		✓ लाफागढ़ रतनपुर के उत्तर दिशा में स्थित है। मैकल पर्वत श्रेणी के अन्तर्गत यहां मुख्य रूप से 3 पहाड़ियां स्थित है। 1. चित्तौरगढ़ 2. पलमा 3. घितौरी
5.	घनगांव	कोसगईगढ़	✓ छुरी से उत्तर पूर्व स्थित धनगांव से 6 किमी. की दूरी पर सघन, वनो एवं पार्श्व में बहती हसदेव नदी समीप समुद्र सतह से लगभग 400 फीट की ऊचांई पर छत्तीसगढ़ के गवों में से एक कोसगईगढ़ विद्यमान है।
6.	कुटुरमाल		

स्पर्श PSC EDUCATION CENTER

मुंगेली

1.	**बैतलपुर**	**मदकू द्वीप**	✓ शिवनाथ नदी के किनारे स्थित यह एक धार्मिक एवं ऐतिहासिक स्थल है। ✓ इसकी आकृति मंडूक के समान है। ✓ शिवनाथ के तटवर्ती भागों में प्राचीन राजवंशों के सिक्के अभिलेख व मन्दिरों के भग्नावशेषों से इसकी प्राचीनता का आभास है। ✓ राधाकृष्ण मंदिर, शिवमंदिर, विष्णु मंदिर प्रसिद्ध है। इस क्षेत्र को केदार द्वीप के रूप में मान्यता प्राप्त है। ✓ उत्खनन से यहां 19 मंदिरों के भग्नावशेष व कलचुरी कालीन ताम्र सिक्का एवं शिवलिंग तथा एक ही वेदी पर पांच शिवलिंग युक्त 12 स्मारत लिंग प्राप्त हुई है जो शैव परम्परा से संबंधित है।
2.		**अचानकमार**	✓ अचानकमार, अभ्यारण सतपुड़ा पर्वत श्रेणी के मैकल पहाड़ी की गोद में फैला नर्मदा, सोन तथा जोहिला नदियों के धाराओं से पल्लवित संपूर्ण क्षेत्र से घिरा है। ✓ अभ्यारण धार्मिक स्थल अमरकंटक तथा नर्मदा नदी के उद्‌गम स्थल के निकट होने से और अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। ✓ अचानकमार के करीब माचा डोंगरी तथा लम्बी क्षेत्र में झंडी डोंगरी व विराट पानी डोंगी में ऊंचे वाट टावर बनाए गए है। ✓ अन्य दर्शनीय स्थल – 1. सिंहावल सागर 2. रक्षा सारव 3. लक्ष्मण डोंगरी 4. पंडवानी तालाब 5. नाग बहरा 6. मेंड्री सरई 7. टंगली पठार
3.		**नर्मदा माई का मंदिर**	✓ इस मंदिर में नर्मदा दाई की सुन्दर प्रतिमा है यहां से नर्मदा नदी निकलती है वहां बुलबुले के रूप में जल का प्रवाह होता है इसी जल को कुंड बनाकर भर दिया गया है इसमें श्रद्धालु स्नान है।
4.		**अमरकंटक**	✓ अमरकंटक को आम्रकूट तथा अमरकंटक कहते है। ✓ यहं से नर्मदा नदी निकली है जिसके कारण इसे मैकल सुता कहते है इसे रेवा के नाम से भी पुकारते है यही सोननदी का उद्‌गम स्थल भी है। ✓ यहां के मंदिरों को 3 समूहों में विभजित किया गया है– 1. प्रथम समूह में अमरकंटक के दक्षिण दिशा के उंचे भागों के मंदिर आते है। 2. द्वितीय समूह उत्तर दिशा की ओर मंदिर का है। 3. मंदिर के चारों ओर मिथुन से संबंधित विभिन्न मुद्राओं में यक्ष, किन्नर और गंधर्वों की मूर्तियों अंकित है।
5.		**पांडवों का मंदिर**	✓ ये मंदिर पांडवों के आनतवास की याद दिलाते है इन मंदिों के समीप जटेश्वर महादेव का मंदिर है जिनका शिल्प खुजराहों से मिलते जुलते है।
6.		**माई की बगिया**	✓ नर्मदा कुंड के लगभग माई की बगिया है। जंगली गुलाब वृक्षों की कतार ब्राहमी तथा अन्य जड़ी–बूटियों पाई जाती है। ✓ गुलवकावली के सुगंधित पुष्प भी मिलते है।
7.		**जुहली का मंदिर**	✓ इसकी प्रतीमा बड़ी कलात्मक है उसके अंगों में उत्कृष्ट आभुषणों की सजावट दिखाई देती है। ✓ जुहली नाई जाती की थी। उसका वास्तविक नाम ज्वाला था।
8.		**कानन पेंडारी**	✓ यहां वन्य प्राणियों को सुरक्षित रखने के लिए बनाया गया अभ्यारण है।

रायगढ़

1.	सिंघनपुर	सिंघनपुर	✓ प्रागैतिहासिक कालके अद्वितीय शैल चित्रों का यह महत्वपूर्ण केन्द्र भूपदेवपुर के उत्तर में रायगढ़ में स्थित है। ✓ यह चंवरढ़ांल पहाड़ी के गिरिपाद पर स्थित हैं ✓ यहां कई गुफाएं जिनमें से कुछ की खोज 1950 में सर्वप्रथम एडरर्सन ने की थी। ✓ शिला में कई आकृतियां है उसमें चितित्रत सभी दृश्य किसी जादू–टोना से संबंधित है। ✓ चित्रों को 3 समूहों में विभाजित किया जा सकता है। 1. गुफा की दीवार पर बने चित्र 2. गहरे विवर के पार्श्व में बने चित्र 3. शैल पृष्ठों पर बने चित्र ✓ आयरन आक्साइड (गेरू) का प्रयोग बांस या सरकंडो की तुलिकाओं के माध्यम से किया गया रहा होगा। ✓ आखेट के दृश्य में अरना भैसा का पीछा करना और दूसरे दृश्य में विशालकाय हाथी का पीछा करते हुए दिखाया गया है। ✓ यह चित्र स्पेन के एक शैलाश्रय से बने हुए प्रागैतिहासिक चित्र में मिलता–जुलता है।
		रामझरना	✓ मान्यता है कि सीताजी को प्यास लगने पर पानी के लिए तीर से जमीन को भेदकर जल व्यवस्था की तब से यह झरनाा का प्रवाह हो रहा है।
2.		कबरा पहाड़	✓ यहां की सारी चित्रकारी लाल रंग की है। यहां घड़ियाल साम्हर, हिंसक आदि मानव के दुर्लभ चित्र दर्शनीय है। ✓ यह चित्रकारी धनुषकार गजमार पहाड़ी से विश्वनाथ पाली तक विस्तृत है।
3.	पुजारीपाली (सांरगढ़)		✓ यहां जैनियों और हिन्दु धर्म से संबंधित देवी–देवताओं की मूर्तियां पायी गयी है। ✓ यह प्राचीन मंदिर भग्नावशेष है जिसे केवटिन मंदिर के नाम से जानते है। ✓ यहां शिवलिंग की स्थापना की गयी है। ✓ पुजारी को जमीन दान में देने के कारण इसका नाम पुजारी पाली पड़ा।
4.	बसनाझर		✓ राबर्टसन स्टेशन क समीप ब्रम्हनी पहाड़ी है। जिसमे ंआदिमानव के चित्र गेरूए रंग मं बनाये गय है। ✓ पुरातत्ववेत्ता इन्हें दस हजार वर्ष पुराना माने है।
5.	सारंगढ़	गिरिवासमहल	
		किंकारी बांध	
		केदरा बांध	
		घुटका बांध	
6.		ओगना	✓ यह प्राचीन गुफा है जो प्राचीन समय में मानव का आश्रय स्थल था। गुफा के अनदर शैल चित्र है।
7.	रायगढ़		✓ यहां प्रगैतिहासिक काल के उपकरण, शैलचित्र, शिलालेख और सिक्के पर्याप्त संख्या में मिले है। ✓ यहां का मोतीमहल, बादलमहल, गौरीशंकर मंदिर श्याममंदिर, पहाड़मंदिर, बंजारी मंदिर प्रसिद्ध हैं
8.	टेरम		✓ यह एक विशालवटवृक्ष है जिसके नीचे प्राचीन देवालय है यह शिवमंदिर एवं जलाशयों का निर्माण कराया गया। ✓ यह 8 इंच का एक खंजर रखा हुआ है जिसे देवी का मानकर लोग इसकी पूजा करते है।

गोरेला-पेंड्रा-मरवाही

1.	धनपुर	✓ पत्थर पर उत्कीर्ण जैन मूर्तिकला
2.	नेचर कैम्प गंगरई मरवाही	✓ जामवंत के नाम से प्रसिद्ध
3.	अमलेश्वर या जलेश्वर महादेव	✓ यह प्राचीन शिव मंदिर है।
4.	राजमहलगढ़ी राजमेरगढ़	
5.	कारीआम	✓ यह एक काली मंदिर है।

कवर्धा

1.		भोरमदेव	✓ राजा गोपालदेव के द्वारा इसका निर्माण 11वीं शताब्दी में किया गया था। ✓ इसे छत्तीसगढ़ का खजुराहो कहा जाता है। यह कोणार्क शैली पर है। ✓ यह एक प्रकार का शिव मंदिर है। ✓ भोरमदेव एक आदिवासी देवता है। ✓ यह स्थल प्राचीन स्थापत्य एवं पुरातत्व कला के लिए प्रसिद्ध है। ✓ यह ग्राम छपरी के निकट चौरा में स्थित है। ✓ एक कमल पुष्प से युक्त पुष्पकरिणी के पास यह मंदिर वास्तु और मूर्तिकला की गौरव गाथा लिये मौन खड़ा है। ✓ गोड़ जाति के उपास्य देव भोरमदेव के नाम पर पड़ा। ✓ मंदिर के बाह्य आवरण पर पुरूष और नारी का संयोग दर्शाया गया है, वह न्युड कला का प्रतीक है। इसे तांत्रिक साधना की अभिव्यक्ति मानते है। ✓ छत पर शतदल कमल बना हुआ है। जहां गरूड़ासीन लक्ष्मीनारायण की प्रतिमा एवं ध्यान मग्न पद्मासन में बैठी हुई प्रतिमा विद्यमान है।
2.		मंडवा महल	✓ चौरा गांव के पास खेतों में एक पत्थर से निर्मित शिव मंदिर है। ✓ 14वीं शताब्दी में इसका निर्माण करवाया। ✓ यहां खुदाई से काल भैरव की विशाल प्रतिमा मिली है। यह मूर्ति घाटियों के घने जंगलों के भू–गर्भ में पाई गयी थी। ✓ दुल्हादेव शिव प्रतिमा है।
3.		छेरकी महल	✓ यह एक शिव मंदिर है। ✓ इसे फणी नागवंशी के शासन काल में एक छेरी चराने वाले को सौप दिया गया था।
4.		डोंगरिया	✓ फेंक नदी के तट पर एक प्राकृतिक शिवलिंग है।
5.		पंचराही	✓ हापनदी के तट पर है यह पुरातात्विक स्थल है। ✓ यह ईशान कोण पर स्थित है।

बेमेतरा

1.	नवागढ़	गिधवा पक्षी विहार	✓ खेडपति मंदिर है, यह मंदिर आदिवासियों से संबंधित है।

दुर्ग

1.		नगपुरा पार्श्व तीर्थ	✓ शिवनाथ नदी के किनारे नगपुरा में जैन धर्मावलम्बियों का तीर्थ है। ✓ इसकी स्थापना 5 फरवरी 1995 में की गयी थी। ✓ रावलमल जैन ने पार्श्वनाथ की मूर्ति स्थापित की। ✓ मंदिर में पार्श्वनाथ की 15 प्रतिमाएँ है। नृत्य और रंग मण्डप में 14 आकर्षक मूर्तियाँ है। ✓ श्री पार्श्वनाथ की सप्रफण नागराज वाली प्रतिमा स्थित है।
2.		कुम्हारी	✓ कैवल्य धाम यहाँ सभी 24 तीर्थंकर का मंदिर बना है।
3.		देवबलौदा	✓ यहाँ शिवाजी का एक प्राचीन मंदिर है।

बालोद

1.		गंगामईया (छलमला)	✓ मधुवारा के जाल में एक मूर्ति फंस गयी थी।
2.		कपिलेश्वर नामक चौकोर सरोवर	✓ इसके किनारे कपिलेश्वर के सात मंदिर बने हुए है। ✓ यहां बडी संख्या में सती चबुतरा है।
3.		ओना कोना	
4.		सियादेवी	

राजनांदगांव

1.	डोंगरगढ़	बम्लेश्वरी मंदिर	✓ बम्लेश्वरी देवी का मंदिर स्थित है। ✓ पहाड़ी पर 1600 की ऊंचाई पर स्थित मंदिर है। ✓ लगभग 2200 वर्ष पूर्व इसका नाम कामाख्या नगरी था।
2.		प्रज्ञागिरी	✓ बौद्धधर्म से संबंधित स्थल है। ✓ केन्द्र सरकार के प्रसाद योजना के तहत डोंगरगढ़ व प्रज्ञागिरी पर्वत के मध्य श्रीयंत्र बनाया जायेगा।
3.		चितवाडोंगरी	✓ नवपाषाणकालीन चित्रण मिला है।
4.		मां भवानी मंदिर	✓ पुराना करेला की पहाड़ी पर स्थित है। ✓ क्वांर और चैत्र नवरात्रि के अवसर पर मंदिर में मनोकामना ज्योति जलायी जाती

			है।
5.	खैरागढ़		✓ यहां भारत का प्रसिद्ध महतवपूर्ण खैरागढ़ इंदिरा कला एवं संगीत विश्वविद्यालय है। ✓ राजा वीरेन्द्र बहादूर सिंह एवं रानी पद्मावती देवी ने अपना राजमहल कमल विलास महल को संगीत महाविद्यालय की स्थापना हेतू दान स्वरूप दे दिया।
6.	अम्बागढ़ चौकी		✓ यहां एक महिषासुर मर्दिनी का मंदिर स्थित है।

रायपुर

1.		हटकेश्वर महादेव मंदिर	✓ राजा ब्रह्मदेव द्वारा बनाया गया मंदिर है। ✓ खारून नदी के तट पर है।
		Suspension Bridge	✓ छत्तीसगढ़ का पहला Suspension Bridge
2.		महंत घासीदास संग्रहालय	
3.		पुरखौती मुक्तांगन	✓ छत्तीसगढ़ की कला एवं संस्कृति की एक झलक एक ही स्थान में कला तीर्थ के रूप में प्रदर्शित किया गया है। ✓ उपवारा गांव के पास 200 एकड़ भूमि में निर्मित है। ✓ इसका उद्घाटन भारत के राष्ट्रपति ने 7 November 2006 में किया था।
4.		शहीद वीर नारायण सिंह आदिवासी संग्रहालय	
5.		चंपारण	✓ चंपारण संत बल्लभाचार्य के जन्म स्थान के नाम से जाना जाता है। ✓ स्वामी बल्लभाचार्य के सम्मान में एक मंदिर का निर्माण किया गया जिसका नाम चम्पकेश्वर महादेव रखा गया है। जो भगवान शिव को समर्पित है। ✓ चंपारण में उनकी दो बैठकें होती है। 1. शमी वृक्ष के नीचे उनकी जन्म स्थली 2. छठी पूजन के स्थान पर ✓ चम्पेश्वर मंदिर में एक शिवलिंग है जो तीन भागों गणेश, पार्वती और स्वयं शिव के रूप में दिखाई देती है।
6.		आरंग	✓ यहां महाभारत कालीन प्राचीन मंदिर स्थल है। ✓ इसे मंदिरों का शहर कहते है। ✓ प्रमुख मंदिर – भांडलदेउल जैन मंदिर, बाघदवेल मंदिर, महामाया मंदिर, पंचमुखी महादेव, हनुमान मंदिर। ✓ बाघदवेल मंदिर की तुलना खजुराहो से की जाती है। ✓ मोरध्वज महोत्सव मनाया जायेगा।
7.		नन्दनवन	✓ रायपुर वन विभाग का यहाँ वन्य जीव संग्रहालय है।
8.		दूधाधारी मठ	✓ राजा ब्रह्मदेव द्वारा बनवाया गया था। ✓ बलभद्र दास ने बनवाया था, दूध का सेवन करते थे।
9.		कौशिल्या माता मंदिर (चन्दखुरी)	✓ विश्व का एकमात्र कौशिल्या माता मंदिर ✓ इसका निर्माण 1973 में हुआ था जो 16 एकड़ क्षेत्रफल जलसेन सरोवर में निर्मित है। ✓ यह हैड ब्रिज बनाया गया है। ✓ यहां पहले 126 सरोवर थे जिसमें से वर्तमान में 20–26 तालाब शेष बचे है।

10.		रींवा	✓ पुरातात्विक स्थल है।

महासमुन्द

1.	खल्लारी	खल्लारी माता मंदिर (भीमपोह)	✓ महाभारतकालीन स्थल है। लाक्षाग्रह है। प्रचीन नाम खल्वाटिका ✓ इसका प्रचीन नाम खल्वाटिका था। ✓ इस मंदिरन का निर्माण देवपाल मोची द्वारा 1415 ई में करवाया गा था। ✓ इस मंदिर में नारायण की मूर्ति है। एक पहाड़ी के मंदिर पर खल्लारी माई की मूर्ति है। ✓ चैत्र पूर्णिमा को यहां मेला लगता है। ✓ यह गुम्बदनुमा चट्टान है जहां खल्लारी की बहन खोपड़ा निवास करती है। ✓ यहां पोखरों तथा तालाबों की अधिकता है।
2.	सिरपुर	आनंद बिहार स्वास्तिक विहार गधेश्वर महादेव	✓ लक्ष्मणेश्वर मंदिर का निर्माण सोमवंशी राजा हर्ष गुप्त की पत्नी ने अपनी पति की स्मृति में भगवान विष्णु को बनवाकर समर्पित किया। ✓ विष्णु के 10 अवतार का वर्णन है। ✓ महानदी के तट पर गंधेश्वर महादेव का मंदिर स्थित है। ✓ यहा शैव, वैष्णव और बौद्ध धर्म को राजाश्रय दिया गया था। ✓ सिरपुर में प्राप्त पीपल की बौद्ध मूर्तियाँ अपने असाधारण कलाप्मक शैली के कारण अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखती है। ✓ इन मूर्तियों की बनावट में तिब्बती प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। ✓ यहां रामजी का मंदिर, आनंद प्रभु बिहार, स्वस्तिक बिहार गंधेश्वर महादेव मंदिर और म्यूजियम स्थित है यहां बड़ी संख्या में पर्यटक आते है।
3.		श्वेतगंगा	✓ यहां एक कुंड से निरंतर जल का प्रवाह होता रहता है। दूर से देखने पर श्वेत रंग का जल दिखाई देता है। ✓ इसके पास भगवान शिव का मंदिर है। ✓ सावन के महीने में यहां का वातावरण छोटा वैधनाथ धाम जैसा लगता है। ✓ इस कुंड से पानी लेकर सिरपुर के गंधेश्वर महादेव के शिवलिंग में जल अभिषेक करते है।
4.	बिरकोनी	चंडी मंदिर	✓ यहां चैत्र और क्वांर माह में नवरात्रि के समय भक्तों द्वारा ज्योति प्रज्वलित की जाती है।
5.		दलदली	✓ यहां प्राचीन शिवमंउिर गोधारा है। गोधारा से निरंतर जल का प्रवाह होता रहता है।
6.		स्वास्तिक विहार	
7.		आनंद विहार	
8.		सुरंग टीला	✓ सीढ़ीनुमा आकृति
	बागबाहारा	चंडी मंदिर	
	गरियाबंद	भूतेश्वर मंदिर	✓ विशाल शिवलिंग ✓ विश्व का सबसे बड़ा शिवलिंग ✓ ये शिवलिंग हर साल बढ़ रहा है।
	राजिम		✓ छत्तीसगढ़ का प्रयाग जिसका नाम परिवर्तित कर उसे पुन्नीमेला कहां गया। ✓ राजिम का प्राचीन नाम देवपुर था। ✓ इसे कमलक्षेत्र या पहापुर (पदमपुर) भी कहा जाता है। ✓ यहां के पांच तीर्थ स्थल प्रसिद्ध है जो कमल के पंखे के समान है। 1. पटेश्वर 2. चम्पेश्वर 3. फनेश्वर 4. बम्हनेश्वर 5. कोपेश्वर
		राजिम लोचन	✓ एक प्रकार का विष्णु मंदिर है।

		मंदिर	✓ यह मंदिर भगवान विष्णु के नेत्र कमल के समान है। ✓ मंदिर में चार भुजाओं वाले विष्णु की मूर्ति है। ✓ इनके चारों ओर 4 छोटे–छोटे मंदिर है। ✓ मुख्य मंदिर के 3 भाग है। ✓ मंदिर के बाजू में गंगा, यमुना, बराह, नरसिंह, सूर्य और दुर्गा आदि की प्रतिमाएँ है। ✓ गर्भ गृह में भगवान विष्णु की चतुर्भुज प्रतिमा है। ✓ यहां महादेव मंदिर, राजीव लोचन, रामचंद्र मंदिर काल भैरव का मंदिर, जगन्नाथ मंदिर इत्यादि। ✓ राजा विलासतुंग एवं कलचुरि सेनापति जगतपाल का शिलालेख इसी मंदिर में है।
		कुलेश्वर महादेव मंदिर	✓ पंचकोषी के नाम से जाना जाता है। ✓ यह मंदिर 5 मंदिरों के मध्य में स्थित है। ✓ यह मंदिर कभी जलमग्न नही होता ✓ पंचकोषी मंदिर – चम्पारण 1. चम्पेश्वर महादेव 2. कोपेश्वर महादेव 3. ब्रह्मनेश्वर महादेव 4. फनेश्वर महादेव 5. पटेश्वर महादेव

धमतरी

	धमतरी	सिहावा पर्वत	✓ सप्त ऋषियों की भूमि ✓ महानदी का उद्गम स्थल ✓ इसे पर्वत पर श्रृंगी ऋषि का आश्रम था। ✓ इसे महेन्द्र पर्वत भी कहते थे।
		अंगरिस (रताया)	✓ रताया नामक ग्राम में अंगरिस ऋषि का आश्रम था।
		मुचकुन्द (मेचकागांव)	✓ सिहावा से कुछ दूरी पर मुचकुन्द ऋषि का आश्रम था।
		बिलई माता मंदिर	
		गंगरेल बांध	
		अंगार मोती	

कांकेर

1.		गढ़िया पहाड़	✓ कंडरा राजा ने गढ़िया पहाड़ के ऊपर दो सरोवर बनवायें हैं। ✓ एक सरोवर सोनाई व दूसरा भाग रूपाई कहलाता है।
2.		मलाजकुण्डम जलप्रपात	✓ मलाजकुण्म का अर्थ है मलाज अर्थात् गुड़डा व कुडुम नाम की मछली होती है जो साप की तरह फुफकारती है।
3.		सिंहवाहिनी मंदिर	✓ इस मंदिर को राजा महादेव ने यह मंदिर बनवाया। ✓ आदिशक्ति मां की मूर्ति स्थापित करवायी।
4.		खैरखेड गुफा	
5.		जुडी पगार गुफा	
		जोगी गुफा	

6.		किलागढ़ देवी मंदिर	

दंतेवाड़ा

1.		दंतेश्वरी माता मंदिर	✓ शंकिनी व डंकिनी नदी के तट पर स्थित है। ✓ तरला ग्राम में बना है। ✓ नरबलि चलने का प्रमाण मिलता है।
2.	बारसुर		✓ इसे तालाबों व मंदिरों का नगर कहा जाता है। ✓ ऐसा कहा जाता है कि यहां 147 मंदिर व तालाब विद्यमान था। ✓ नन्दी की प्रतिमा (काले ग्रेनाइट) के लिए प्रसिद्ध है।
		बत्तीसा मंदिर	✓ 32 खम्भों वाला मंदिर है। ✓ यह शिवमंदिर है।
		चंद्रादित्य मंदिर	
		विशाल गणेश मूर्ति	✓ 8 ऊंची गणेश की मूर्ति है।
		मामा–भांजा मंदिर	
3.		कारली महादेव मंदिर	
4.		ढ़ोलकल गणेश मंदिर	
5.		उर्सकल (गमावाड़ा)	✓ महापाषाणकालीन स्मारक
6.		तुलार गुफा	✓ गुफा के अंदर विशाल कक्ष है जहां शिव–पार्वती की मूर्ति दिखाई देती है। ✓ यह साल में दो बार मेला लगता है।

बस्तर

1.	जगदलपुर		✓ इन्द्रावती नदी के तट पर बसा हुआ एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक व सांस्कृतिक नगरी है। ✓ इसका प्राचनी नाम जगदुगुडा था। ✓ जगदुमाहरा नामक व्यक्ति से राजा ने जमीन खरीरदी और अपनी राजधानी स्थापित की। ✓ जगदलपुर को व्यवस्थित ढंग से बसाया और जगह–जगह बड़ा–बड़ा चौराहा बनवाया। इसी कारण इसे चौराहों का शहर कहा जाता है।
2.		राजमहल	✓ बस्तर महाराज का राज3महल दण्डकारण्य के वैभव व गरिमा का जीता जागता उदाहरण है। ✓ दंतेश्वरी माता का मंदिर राजमहल परिसर के ही अंदर है। ✓ बस्तर दशहरा का प्रारंभ यही से होता है।
3.		दलपतसागर	✓ दलपतदेव ने 385 एकड़ के विस्तृत क्षेत्र में विशाल सरोवर का निर्माण करवाया था।

स्पर्श PSC EDUCATION CENTER

			✓ मड़िया दम्पत्ति और उनके बच्चे की विशाल प्रतिमा स्थापित की गई है। ✓ यहां का म्यूजिकल फांउटेन बड़ा प्रसिद्ध है। इसके मध्य में टीला है जिसमें शिव मंदिर स्थापित है। ✓ दलपत सागर तट पर बालाजी का मंदिर है।
4.		मानव शास्त्रीय अजायब घर	✓ यह कार्यालय सर्वे ऑफ इंडिया के कार्यालय में धरमपुरा में स्थित है। ✓ यहां विभिन्न आदिवासियों के जीवन के ढंग को प्रदर्शित किया गया है।
5.	चिंगीतराई (दरभा)	चिंगीतराई का शिव मंदिर	✓ दरभा से एक पगडंडी मार्ग से 8 किमी. की दूरी पर पश्चिम भाग में आदिवासी गांव चिंगीतराई स्थित है। ✓ स्थानीय लोगों के आनुसार चिंगीतराई का अर्थ देवताओं का तालाब होता है। ✓ तालाब के निकअ जर्जर अवस्था में शिव मंदिर है। ✓ मंदिर के गर्भग्रह में अदभुत जलहरी युक्त शिवलिंग है जो बस्तर के अन्य शिवलिंगों से भिन्न है जिसके कारण शिवलिंग पाषण कलश के ऊपर स्थित है। जो वास्तुकला का अनमोल धरोधर है। ✓ चिंगीतराई शिव मंदिर का खुजराहोंकालीन होने तथा उत्कल कारीगरों द्वारा निर्मित किये जाने का प्रमाण मिलता है। ✓ चिंगीतराई की वास्तुशैली में नागर शैली (उत्तर भारत), द्रविड शैली (दक्षिण भारत) और बेसर शैली (मध्यभारत) का उत्कृष्ट नमूना मिलता है।
6.	बड़े–डोंगर (बस्तर)	भोंगापाल	✓ बड़े–डोंगर से 3 किमी. उत्तर–पूर्व दिशा में घने वन के भीतर एक टीला है जिसमें विशाल चैत्य मंदिर, सप्तमातृका का मंदिर तथा शिव मंदिर के भग्नावेशष मिले है। ✓ इसी के समीप तमूरा नामक एक पहाड़ी नदी प्रवाहित होती है। ✓ स्थानीय लोग चैत्य मंदिर टीला को डोंकरा बाबा टीलार तथा सप्तमातृक टीला को रानी टीला कहते है। ✓ स्थानीय लोग बौद्ध प्रतिमा को तंत्रविधा के देव गांडादेव की पत्नी कहते है। ✓ सात देवियों ब्राम्हाणी, वैष्णवी, इन्द्राणी, कोंमारी, नागरेश्वरी, वाराही तथा नरसिंही है।
7.		नारायणपाली मंदिर	✓ यह मंदिर दण्डकारण्य प्रदेश के मध्य भाग में स्थित बस्तर जिले के जिला मुख्यालय जगदलपुर से उत्तर–पश्चिम दिशा में 43 किमी. की दूरी पर चित्रकोट जलप्रपात के दूसरे किनारे पर नारायणपाल आदिवासी गांव बसा हुआ है। ✓ हजारो वर्ष पूर्व जिनमें स्थापत्य कला का अद्भूत शैली है। ✓ मंदिर के निकट इन्द्रावती और नारंगी नदी का संगम स्थल हैं ✓ नारायणपाल मंदिर बस्तर जिले का एकमात्र विष्णु मंदिर है। इस केन्द्र संरक्षित सूची में शामिल किया गया है। ✓ स्थानीय लोगों का कहना है कि विष्णु मंदिर के तलघर में अपार धन–दौलत का भंडार है।
8.	ढोडरेपाल (तोपाल के निकट)	विश्वकर्मा मंदिर	✓ ताकपाल तहसील में सड़क के किनारे मावली पाठा है। यहां से पहली बायी 5 किमी. पगडंडी मार्ग के सहारे जाने पर ढोडरेपाल गांव स्थित है। ✓ ढोडरेपाल से 2 किमी. की दूसरी पर जीर्ण अवस्था में विश्वकर्मा मंदिर है। ✓ उसी गांव बाहर जीर्णावस्था में कुल 3 मंदिर है। इन तीन मंदिर में से एक में शिवलिंग है। वहां की शिवलिंग तथा जलहारी नीचे घंसी हुई है। ✓ दण्डकारण्य मे केवल ढासरेमाल में ही विश्वकर्मा का मंदिर है।
9.		मुचकी हुंगा का मृतक स्तंभ, डिलमिली	✓ बस्तर क्षेत्र के सम्पन्न आदिवासी नायक मुचकी हुंगा माड़िया का मृतक स्तंभ स्थित है। ✓ काष्ठ से निर्मित मृतक स्तंभ मूलतः एक जयस्तंभ है। ✓ इसे केन्द्र संरक्षित सूची में शामिल किया गया है।
10.	बस्तर	महादेव मंदिर	✓ इस मंदिर का निर्माण बस्तर के राजाओं द्वारा कराया गया था, जो वर्तमान में केन्द्रीय पुरातत्व विभाग द्वारा संरक्षित है। ✓ मान्यता है की, श्रद्धालु यहां संतान प्राप्ती की मनोकामना के लिए आते है तथा जब उनकी मनोकामना के लिए आते है तथा जब उनकी मनोकामना पूरी हो जाजी है तो यहां त्रिशुल एवं धातु निर्मित नागर अर्पित करते है।

			✓ यहां प्रतिवर्ष माघ में गंगाबाई के नाम से मेले मंदिर में स्थित शिवलिंग को स्वयंभू कहा जाता है।
11.	केशरपाल	गुढ़ियारी मंदिर	✓ केशरपाल में प्राचनी शिव मंदिर निर्मित है। इस मंदिर में उमाभहेश्वर एवं गणेश जी की प्रतिमा विद्यमान है।
12.	छिंदगांव	शिवमंदिर	✓ इन्द्रावती नदी के तट पर छिंदगां मे ऊंचे–ऊंचे चबूतरे पर शिव मंदिर स्थित है। इस मंदिर का गर्भग्रह सतह से नीचे तथा शिखर भाग क्षतिग्रस्त है।
13.	गुमड़पाल	शिवमंदिर	✓ सिंधिगुड़ी के गुमड़पाल नामक स्थल में 13वी/14वी शताब्दी में निर्मित प्राचीन शिवलिंग स्थित है।
14.	धुमरमंगपारा	शिवमंदिर	✓ चित्रकूट के समीप यह शिवमंदिर के गर्भग्रह में वर्गाकार जलाधारी शिवलिंग स्थापित है।
15.	बस्तर	चित्रकूट	✓ इन्द्रावती नदी बस्तर के पूर्वी भाग से दण्डकारण्य प्रदेश में प्रवेश करती है और पूर्व से पश्चिम दिशा की ओर प्रवाहित होती हुई चित्रकूट के समीप जलप्रपात का निर्माण करती है।

नारायणपुर

1.		रामकृष्ण मिशन आश्रम	✓ आत्मानंद के द्वारा 1985 में इस आश्रम की स्थापना की गयी।
2.		छोटे डोंगर	✓ प्राचीन मंदिर के भग्नावशेष

- **ईसाई धर्म**
  - कुनकुरी
  - मदकुद्वीप
- **जैन धर्म**
  - महेशपुर
  - गुंजी/दम्पदरहा
  - धनपुर
  - नगपुरा
  - आरंग
  - कुम्हारी
- **बौद्ध धर्म**
  - सिरपुर (बौद्व महोत्सव)
  - डोंगरगढ़ (बौद्ध सम्मेलन)
  - भोंगापाल
  - मैनपाट (बौद्ध भिक्षुक)
- **मुस्लिम धर्म**
  - तकिया/सरगुजा
  - /रतनपुर
  - लुतरा /बिलासपुर

➢ सतनाम पंथ

- गिरौदपुरी
- चेटवा धाम

➢ कबीर पंथ

- कुदुरमाल (कोरबा)
- दामाखेड़ा/बलौदाबाजार

➢ रामवन पथ–गमन मार्ग

- कुल चिन्हांकित जगह – 57
- पहले चरण में 9 स्थान –

  1. सीतामढ़ी–हर चौका 2. रामगढ़ 3. शिवरीनारायण
  4. तुरतुरिया 5. चंदखुरी 6. राजिम
  7. सिहावा 8. जगदलपुर 9. रामाराम

- लंबाई – 2260 किमी.
- पहला जगह – चंदखुरी
- दूसरा जगह – शिवरीनारायण

➢ स्वदेश दर्शन योजना, ट्राइबल टूरिज्म रिसार्ट

- प्रारंभ – 2015
- Theme Based Tourism
- प्रत्येक Theme को Circuit कहा जाता है।
  1. Tribal Circle
  2. Rural Circle
  3. Eco Circle
- छत्तीसगढ़ में 13 जगह
  1. कुरदर हिल इको – बिलासपुर
  2. बैगा एथनिक रिसोर्ट – सरोधादादर (कबीरधाम)
  3. धनकुल एथनिक रिसार्ट – कोंडागांव
  4. नेचर ट्रेल – चित्रकोट

➢ प्रसाद योजना

- प्रारंभ – 2014–15
- तीर्थयात्रा को Promote करने के लिए
- श्री यंत्र डोंगरगढ़ में बनाया जायेगा।
- सतरेंगा (Sea प्लेन) व बुका डैम – कोरबा